संपादक

रमणिका गुप्ता

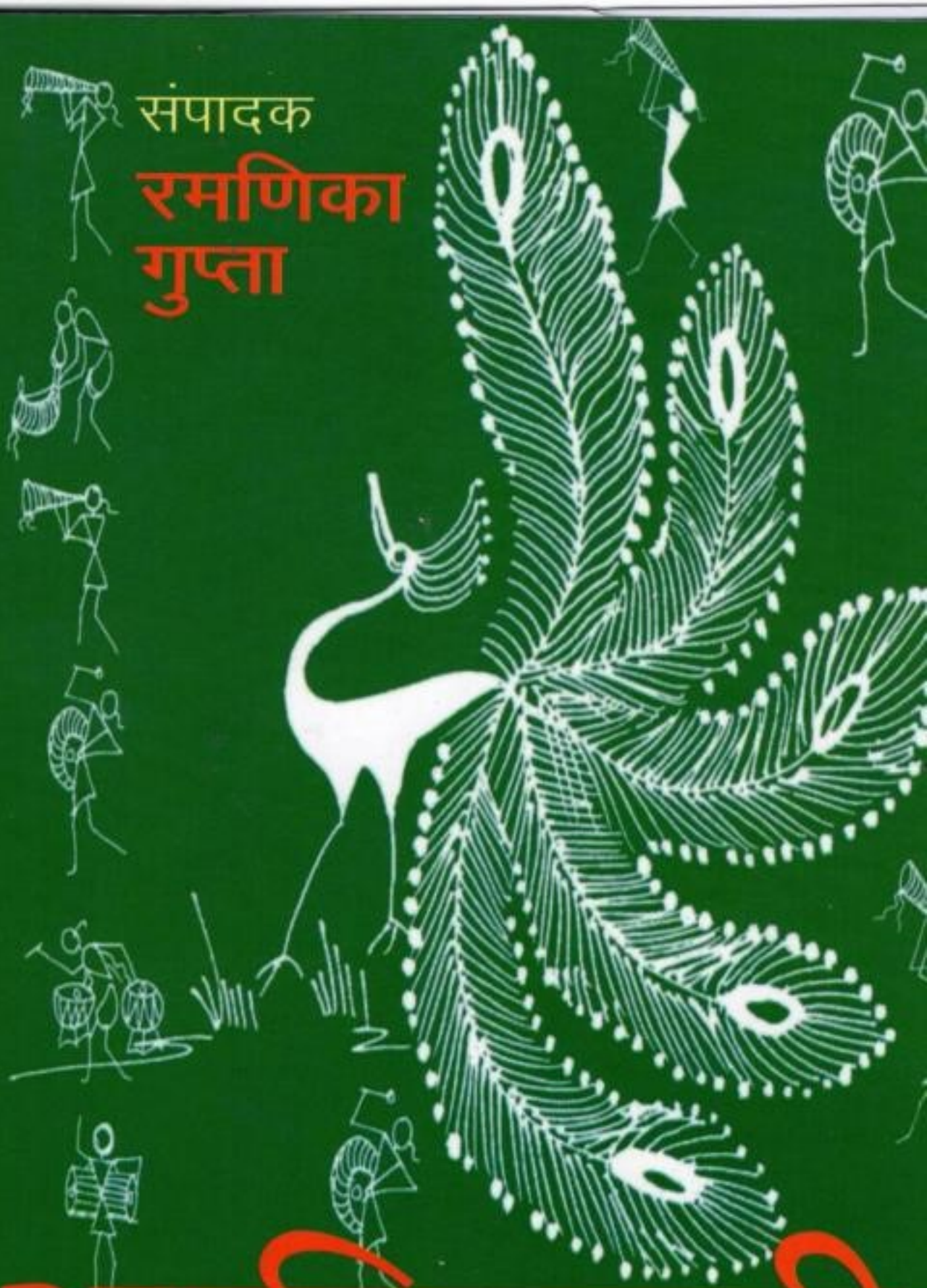

आदिवासी

आदिवासी : सृजन मिथक एवं अन्य लोककथाएँ

[झारखंड, गुजरात, महाराष्ट्र तथा अंडमान निकोबार आदिवासियों की लोककथाएँ]

आदिवासी
सृजन मिथक एवं
अन्य लोककथाएँ

संपादक
रमणिका गुप्ता

समर्पित उस आदिम आदिवासी समाज को
जिसने कल्पना की अपनी उड़ानों से विश्व में
खोजी-दृष्टि और आविष्कार के बीज बोए

अनुक्रम

भूमिका	*रमणिका गुप्ता*		*13*
I पृथ्वी-सृजन	**प्रस्तुति**	**भाषा**	
पृथ्वी की उत्पत्ति-कथा	*दिगम्बर हांसदा*	(संताली)	19
सोने की थाली में बनी धरती	*कृष्णचंद टुडू*	(संताली)	23
धरती-सृजन की कथा	*सी. आर. माँझी*	(संताली)	25
पृथ्वी की सृजन-कथा	*रोज केरकेट्टा*	(खड़िया)	27
सृष्टि की उत्पत्ति	*सोमा सिंह मुण्डा*	(मुण्डारी)	28
ऐसे हुआ सृष्टि का सृजन	*दमयन्ती सिंकू*	(हो)	31
II मनुष्य की सृष्टि			
जीव-जंतु, नर एवं रात-दिन बनने की कथा	*लिविनुस तिर्की*	(कुड़ुख़)	36
मनुष्य के सृजन की कथा	*रोज केरकेट्टा*	(खड़िया)	39
(क) आदि स्त्री-पुरुष की सृष्टि			
(ख) चाँवरा-भाँवरा			
(ग) पंखदार घोड़े			
मनुष्य की सृजन-कथा	*रोज केरकेट्टा*	(खड़िया)	42
खड़िया मनुष्य की उत्पत्ति	*इग्नाशिया टोप्पो*	(खड़िया)	44
(क) आदि खड़िया			
(ख) पट-बाँध खड़िया			
(ग) खड़िया जनजाति की उत्पत्ति			

III प्रलय समाज-सृजन

प्रलय के बाद मनुष्य की पुनर्सृष्टि की कथा	*इग्नाशिया टोप्पो*	(खड़िया)	46
'शबर' आदिवासी समूह की उत्पत्ति	*रोज केरकेट्टा*	(शबर)	48
प्रलय के बाद भाई-बहन ने रचा 'हो' समाज	*सरस्वती गागराई*	(हो)	50
जब प्रथम स्त्री 'ता-मीता' ने पशुओं को देखने-सुनने की शक्ति दी	*लीलाधर मंडलोई*	(अंडमानी)	52
निकोबारी उत्पत्ति कथाएँ	*लीलाधर मंडलोई*	(निकोबारी)	54
घोड़े की लगाम का सृजन	*रोज केरकेट्टा*	(मुण्डारी)	57

IV प्रकृति-सृजन कथाएँ

माराङ बुरू के दो भैंसे	*कृष्णचंद टुडू*	(संताली)	58
काड़ो-कोइली की कथाएँ	*सी. आर. माँझी*	(संताली)	60
सूरज और चाँद	*रोज केरकेट्टा*	(खड़िया)	63
चाँद और सूरज	*रोज केरकेट्टा*	(खड़िया)	64
ध्रुव तारा और सप्त ऋषि	*रोज केरकेट्टा*	(खड़िया)	65
नदी की कथा	*रोज केरकेट्टा*	(खड़िया)	66
चाँद और सूरज की कथा	*हरि उराँव*	(कुड़ुख़)	67
बारिश की कहानी	*विरसिंग पाडवी*	(मराठी)	69

V कृषि का आरंभ

हल का सृजन	*रोज केरकेट्टा*	(खड़िया)	71
कृषि का आरंभ	*रोज केरकेट्टा*	(खड़िया)	72
नारियल की कहानी	*लीलाधर मंडलोई*	(निकोबारी)	74

VI खोज और आविष्कार

माइया डुकु ने दिया लोहे को आकार	*लीलाधर मंडलोई*	(अंडमानी)	77
चावरा द्वीप की खोज	*लीलाधर मंडलोई*	(निकोबारी)	80

VII पशु-पक्षी और जलचर

छोटी चिड़िया की कथा	*सी. आर. माँझी*	(संताली)	84

पंडुक और उसकी बेटी	*रोज केरकेट्टा*	(खड़िया)	88
सुग्गी और उसकी बेटी	*रोज केरकेट्टा*	(खड़िया)	89
तोता और पंडुक का 'मोरा'	*रोज केरकेट्टा*	(खड़िया)	90
चालाक सियार	*हरि उराँव*	(कुड़ुख़)	92
शक्ति और बुद्धि की जंग	*ज्योति लकड़ा*	(कुड़ुख़)	97
शेर की गुफ़ा में सियार	*विरसिंग पाडवी*	(मराठी)	99
कौआ और मैना का घोंसला	*विरसिंग पाडवी*	(मराठी)	101
बाघ कच्चा मांस क्यों खाता है और बिल्ली मनुष्यों की बस्ती में क्यों रहती है?	*विरसिंग पाडवी*	(मराठी)	102
मोर के पैर काले क्यों?	*विरसिंग पाडवी*	(मराठी)	104
मगरमच्छ और सियार	*हरीश मंगलम*	(गुजराती)	107
बछड़ा और बाघ	*हरीश मंगलम*	(गुजराती)	109
खरगोश के आगे के पैर छोटे क्यों?	*विरसिंग पाडवी*	(गुजराती)	112

VIII प्रेम-कथा

भाई-बहन के प्रेम की कथा	*रोज केरकेट्टा*	(मुण्डारी)	114
और वे डूब गए	*खद्दी उराँव*	(कुड़ुख़)	115
शुआन की आस में गिरि	*लीलाधर मंडलोई*	(निकोबारी)	116
पहाड़ और परी का सपना	*लीलाधर मंडलोई*	(अंडमानी)	122
तताँरा-वामीरो	*लीलाधर मंडलोई*	(अंडमानी)	124
वह अब भी रास्ता देख रही है	*लीलाधर मंडलोई*	(अंडमानी)	130

IX विवाह, गोत्र, रीति-रिवाज, अनुष्ठान

पिलचू हड़ाम/पिलचू बूढ़ी : विवाह	*कृष्णचंद टुडू*	(संताली)	133
नीलगाय के बच्चे	*कृष्णचंद टुडू*	(कुड़ुख)	136
कापी बुरू	*जोबा मुरमू*	(संताली)	138
सोहराय पर्व क्यों मनाया जाता है	*श्याम बेसरा*	(संताली)	140
डायन विद्या का रहस्य	*अशोक सिंह*	(संताली)	146

साले को बैल देने की प्रथा	*अशोक सिंह*	(संताली)	147
गोत्र-कथा	*रोज केरकेट्टा*	(खड़िया)	149
हँड़िया की प्रथा	*इग्नाशिया टोप्पो*	(खड़िया)	151
नामकरण	*इग्नाशिया टोप्पो*	(खड़िया)	152
विवाह की रस्म कैसे बनी	रोज केरकेट्टा	(खड़िया)	154
गोदना की प्रथा	इग्नाशिया टोप्पो	(खड़िया)	155
पोयता (जनेऊ) की कथा	इग्नाशिया टोप्पो	(खड़िया)	156
खड़िया जाति की उत्पत्ति, नामकरण एवं प्रव्रजन	*इग्नाशिया टोप्पो*	(खड़िया)	157
छौ नाच का आरंभ	*रोज केरकेट्टा*	(मुण्डारी)	159
चंद्रग्रहण	*खद्दी उराँव*	(कुड़ुख)	160
ओरगाड़ा हेम्ब्रम ने सभी को खींचकर नदी पार कराया	*सिद्धेश्वर सरदार*	(भूमिज)	161
करम की कहानी	*लिविनुस तिर्की*	(कुड़ुख)	164

X रिश्तों का सच

पाँच भाइयों की दुलारी बहन	*अशोक सिंह*	(संताली)	165
नवजात बच्चे और केंद फल	*अशोक सिंह*	(संताली)	167
छह भाई और एक बहन	*रोज केरकेट्टा*	(मुण्डारी)	168
दो मित्र	*रोज केरकेट्टा*	(मुण्डारी)	169

XI कायांतरण

चाँवरा-भाँवरा	*भोलानाथ मार्डी*	(संताली)	171
ढोल से निकली छोटी बहन	*अशोक सिंह*	(संताली)	174
मोर के अंडे	*रोज केरकेट्टा*	(मुण्डारी)	176
अमृत-फल	*रोज केरकेट्टा*	(मुण्डारी)	178
धवई फूल	*सिकरा दास तिर्की*	(मुण्डारी)	180
अश्मीभूत होने की कथा	*इग्नाशिया टोप्पो*	(खड़िया)	184

उलटबाघा की कथा	*इग्नाशिया टोप्पो*	(खड़िया)	185
गुडुंदा फूल और लड़की	*रोज केरकेट्टा*	(खड़िया)	187
कुली बूढ़ी	*रोज केरकेट्टा*	(खड़िया)	189
गिद्ध और आदमी	*रोज केरकेट्टा*	(खड़िया)	190
काना दादा	*अनुराधा मुण्डू*	(हो)	192
डायन के राज में घरजमाई	*हरीश मंगलम*	(गुजराती)	195

XII लोकजन्य कथाएँ

अनाथ बच्चा और राज हाथी	*सी. आर. माँझी*	(संताली)	196
बुढ़िया ने बूढ़े को ओझा बनाया	*अशोक सिंह*	(संताली)	201
माँ दो को एक बनाने गई है	*अशोक सिंह*	(संताली)	203
बहरों की कथा	*अशोक सिंह*	(संताली)	204
चालाक बितना की कथा	*अशोक सिंह*	(संताली)	206
लालची दामाद	*अशोक सिंह*	(संताली)	207
चाँवरा-भाँवरा	*जोबा मुरमू*	(संताली)	208
बड़ा भाई और छोटा भाई	*रोज केरकेट्टा*	(मुण्डारी)	210
बुद्धिमान बेरगा	*उर्सुला भेंगरा*	(मुण्डारी)	212
छप्पर बगीचा	*खद्दी उराँव*	(कुड़ुख)	217
रानी की हँसली	*लिविनुस तिर्की*	(कुड़ुख)	218
भरिया और बाघ	*लिविनुस तिर्की*	(कुड़ुख)	220
आलसी युवक	*लिविनुस तिर्की*	(कुड़ुख)	221
मूर्ख व्यक्ति	*लिविनुस तिर्की*	(कुड़ुख)	223
लुका-छिपी का खेल	*लिविनुस तिर्की*	(कुड़ुख)	226
भिखारी बुढ़िया का मुर्गा	*लिविनुस तिर्की*	(कुड़ुख)	229
सिंदूर और शादी	*लिविनुस तिर्की*	(कुड़ुख)	233
सरहुल और राजकुमारी	*हरि उराँव*	(कुड़ुख)	236
बड़े हलवे	*लिविनुस तिर्की*	(कुड़ुख)	238

साहसी बुधवा	*लिविनुस तिर्की*	(कुड़ुख)	240
कोराइन डूबा	*ज्योति लकड़ा*	(कुड़ुख)	241
गुदरूम बच्चा और कौआ	*ज्योति लकड़ा*	(कुड़ुख)	252
सब चिरई चेरे-बेरे, चोचा चिरई निचोत	*ज्योति लकड़ा*	(कुड़ुख)	255
चार पैसे की अक्ल	*ज्योति लकड़ा*	(कुड़ुख)	256
पत्नी, पुरुष के बाईं ओर क्यों?	*लुसुक समद*	(भूमिज)	259
शराब में पशु-पक्षियों की सात सनकें	*विरसिंग पाडवी*	(मराठी)	262
फाँसी का तख़्ता	*विरसिंग पाडवी*	(मराठी)	263
भगवान का महाआलसी दामाद	*विरसिंग पाडवी*	(मराठी)	266
श्मशान-भूमि का भूत	*विरसिंग पाडवी*	(मराठी)	267
हाथ-पैर-गाल पर ही ठंड ज़्यादा क्यों?	*विरसिंग पाडवी*	(मराठी)	269
चतुर बहन	*हरीश मंगलम*	(गुजराती)	270
अनाथ लड़का	*गिरीश रोहित*	(गुजराती)	272
बाँझ बुढ़िया	*हरीश मंगलम*	(गुजराती)	275
अपनी मातृभूमि की ओर	*लीलाधर मंडलोई*	(अंडमानी)	279
आदिम लेन-देन	*लीलाधर मंडलोई*	(निकोबारी)	283
मीठा पानी	*विरसिंग पाडवी*	(मराठी)	285

आदिम मनुष्य की अपेक्षाओं-आकांक्षाओं की विरासत

लोकतत्त्व किसी भी जाति-समाज की सांस्कृतिक विरासत होते हैं। ये कथाओं, लोकगीतों, कहावतों, मुहावरों आदि कई रूपों में वाचिक परंपरा के रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी यात्रा करते हैं। आधुनिकता के प्रवाह में ये विस्मृत भी होते हैं और परिमार्जित भी। आदिवासी संस्कृति अब तक ज्ञात मानव सभ्यताओं में सबसे प्राचीन है। इस समाज की लोककथाओं-गाथाओं में मानव सभ्यता के शुरुआती दौर के सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यबोध की झलक तो मिलती ही है, साथ ही ये हमें आदिम मनुष्य को विस्मित कर देने वाली कल्पना की उड़ान और मनुष्य की आकांक्षाओं-अपेक्षाओं की मंत्र-मुग्ध करने वाली विरासत भी सौंपती हैं। वे हमें अतीत के उन कोनों में ले जाती है, जहाँ धरती प्रेमिका है और आकाश प्रेमी, जहाँ चंद्रमा और सूरज का भाई-बहन के नाते संवाद चलता है—जहाँ प्रकृति या स्पिरिट्स धरती के निर्माण की योजना बनाती हैं—जहाँ मनुष्य के सृजन हेतु मनुष्य, प्रकृति और जीव-जंतुओं से सहयोग लेता है। इन मिथकों के माध्यम से हम धरती की निर्माणावस्था तक पहुँच जाते हैं। हम पहुँच जाते हैं जहाँ मनुष्य और अन्य जीव-जंतु चौपाए, दोपाए या रेंगने वाले वनचर-जलचर, पशु-पक्षी परस्पर वार्तालाप करते हैं। आदिम मनुष्य की कल्पना की ये उड़ान हमें मनुष्य और धरती के विकास की कथा से जोड़ देती है। उनकी लोककथाएँ हमें उनकी विरासत और इतिहास के रू-ब-रू खड़ा कर देती हैं। समय के साथ-साथ इन मिथकों और लोककथाओं में परिवर्तन आता है—चंद्रमा प्रेमी से महाजन बन जाता है और साँप बन जाते हैं कोयल-कारो नदियाँ। सदियों का अंतराल समय की पट्टिका पर बदलती सदियों की छाप छोड़ते चलता है। फासले, दूरियाँ, भूगोल, धर्म, परिवेश कुछ न कुछ जोड़ते-घटाते चलते हैं। ये कथाएँ—मिथक मानव सभ्यता के विकास की कथाएँ हैं—परिवर्तनों की दस्तकें दर्ज हैं इनमें—कल्पना और यथार्थ की भाषा में बोलती हैं ये कथाएँ। यदि हमने मौजूदा भूमंडलीकरण के दौर में मानव सभ्यता की इस विरासत को सुरक्षित नहीं रखा तो वर्तमान पीढ़ी के साथ ही ये विस्मृत हो जाएँगी। कुछ वर्षों के बाद इन्हें ढूँढ़ पाना कठिन हो जाएगा।